पाठक मंच

अंग्रेजों ने जो अपने लूट और दोहन के साम्राज्य को कायम रखने केलिए भारत में ट्रेनों या कारखानों का निर्माण किया उन्हीं चीज़ों ने पूरे स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों की कब्र खोदने का भी काम किया। 1947 के बाद भारत की बुर्जुआ सरकार ने भी अंग्रेजों की उन्हीं नीतियों को आगे बढ़ाया और पूँजीपतियों के सेवा के लिए ट्रेनों, कारखानों तथा तमाम अन्य चीज़ों को फैलाया शायद ये चीज़ें ही सर्वहारा क्रान्ति में इनकी कब्र खोदें।

गोरखपुर स्टेशन पर रुकने के बाद ट्रेन अपनी वास्तविक गति में आ गयी थी, मैं अपनी माँ के साथ नाश्ता निकालने में मुस्तैद था तभी डिब्बे के दूसरे कोने से कुछ अस्पष्ट आवाज कान से टकराई। दूसरे ही क्षण आवाज स्पष्ट और गुंजायमान हो गयी। अब दूसरी सभी आवाजों पर नारों का क़ब्ज़ा था। मेरे कानों में भगतसिंह का सपना, पूँजीवाद हो बर्बाद.. जैसे नारे गूँज रहे थे, और दिमाग समझदारी बनाने की कोशिश कर रहा था तभी एक नौजवान युवक ने मेरे हाथ में एक पर्चा दिया, मैं पर्चा पूरी तल्लीनता से पढ़ने लगा। दिमाग में मानों एक नयी समझदारी विकरण का विस्फ़ोट हुआ हो। दिल्ली लौटकर इसके बारे में जानने को बैचेन था। दिल्ली पहुँचकर सम्पर्क किया और हमें साथी शिवार्थ ने 'आह्वान' (जनवरी-मार्च, 09) का अंक पढ़ने को दिया। अपने मकसद के बारे में बातचीत की। उससे सम्बन्धित साहित्य भी पढ़ने को दिया। पूँजीवादी सभ्यता से उत्पन्न मानसिक गुलामी की मोटी चादर एक-एक करके उठने लगी। जैसे-जैसे अध्ययन का सिलसिला बढ़ने लगा चीज़ें स्पष्ट होने लगी, चाहे वो आतंकवाद का हौव्वा और उसके मूल कारण, विश्व आर्थिक मन्दी के कारण और उत्पन्न करने वाले तत्त्व, पूँजीवादी व्यवस्था का खूनी और निरंकुश चेहरा। कुछ दिनों पहले आह्वान का अप्रैल-जून, 09 का अंक भी मिला, क्यों है ऐसा पाकिस्तान लेख पाकिस्तान के मौजूदा स्थिति और वहाँ आंतरिक राजनीति तथा वहाँ के पूँजीवादी व्यवस्था को समझाने का क्रमबद्ध सरल और सटीक लेख था जिसकी भूरि-भूरि प्रंशसा करता हूँ। टाटा की काली करतूतें, आम जनता के प्रतिनिधियों का चुनाव..., स्माइल पिंकी : मुस्कान छीनने और देने का सच पर लिखा गया लेख रतन टाटा जैसे खूनी और लुटेरे भारतीय पूँजीपतियों का सच, भारतीय लोकतन्त्र का नंगा धनतन्त्र वाला रूप और एन.जी.ओ. पन्थी संस्थाओं की नौटंकी का सच इस पूरी खूनी व्यवस्था का पुर्जा-पुर्जा खोल कर रख देती है।

आज के दौर में यह पत्रिका नौजवानों में एक नयी क्रान्तिकारी विचारों की लहर पैदा कर रही है साथ ही साथ वैसे तमाम क्रान्तिकारी सोच को भी गोलबन्द करने का भी काम कर रही है जो भविष्य में होने वाले अवश्यम्भावी क्रान्ति में मील का पत्थर साबित होगी।

–नवीन कुमार
बेगूसराय, खगड़िया, बिहार

मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का आह्वान (अप्रैल-जून, 2009) अंक मिला। काफ़ी देर से मिला। आशा है कि पत्रिका को समय से निकाल कर हमारे इन्तजार के कष्ट को कम करेंगे। चुनाव पर लिखे गए दोनों लेख भारतीय प्रजातन्त्र की चुनावी नौटंकी को बखूबी बेनकाब करते हैं। टाटा का आम आदमी और सेनगुप्ता कमेटी की रिपोर्ट एक जगह दिखायी गई है जो विज्ञापनों के बाज़ार के आम आदमी एवं आम आदमी के यथार्थ को उघाड़कर रख देती है। 'क्यों ऐसा है पाकिस्तान' वर्तमान पाकिस्तान की अवस्थिति पर एक सुस्पष्ट विचार प्रदायी लेख है। इतने पास के देश के बारे में हम लोग कितना कम जानते हैं। शासक वर्गों द्वारा प्रचारित तमाम मिथ्याधारणाओं को इस लेख ने तोड़ने का काम किया है। असल में वहाँ भी ग़रीबी है, यहाँ भी ग़रीबी है। और ग़रीबों की दुश्मन दोनों देशों के शासक वर्ग अन्धराष्ट्रवादी उन्माद फैलाकर सिर्फ़ अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। यह बहुत ज़रूरी लेख था। आपसे गुजारिश है, अपने आस-पास के देशों के बारे में और दुनिया के तमाम देशों के बारे में ऐसे महत्त्वपूर्ण लेख 'आह्वान' में आने चाहिये। यह हम नौजवानों की समझदारी को खोलने का काम करेंगे। उम्मीद है आप हमारी बात पर गौर करेंगे। 'एथेन्स में मज़दूरों का छात्रों के नाम खुला पत्र' विश्व 'छात्र-युवा' आन्दोलन का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है और हमारे समय के आन्दोलन का ऊर्जा स्रोत–पढ़कर अच्छा लगा। नयी कलम से लखविन्दर की तीन कविताएँ स्वप्नों को ज़मीन मुहैया कराती है। 'पुस्तक समीक्षा' अगर आगामी अंकों में शामिल कर सकें तो ठीक होगा ऐसा मेरा सुझाव है।

– ब्रजेश कुमार
गुना, मध्य प्रदेश

एक अपील

'आह्वान' सारे देश में चल रहे वैकल्पिक मीडिया के प्रयासों की एक कड़ी है। हम सत्ता प्रतिष्ठानों, फ़ण्डिंग एजेंसियों, पूँजीवादी घरानों एवं चुनावी राजनीतिक दलों से किसी भी रूप में आर्थिक सहयोग लेना घोर अनर्थकारी मानते हैं। हमारी यह दृढ़ मान्यता है कि जनता का वैकल्पिक मीडिया सिर्फ़ जन संसाधनों के बूते खड़ा किया जाना चाहिए।

अत: हम अपने सभी पाठकों- शुभचिन्तकों-सहयोगियों से अपील करते हैं कि वे अपनी ओर से अधिकतम सम्भव आर्थिक सहयोग भेजकर परिवर्तन के इस हथियार को मजबूती प्रदान करें।

– सम्पादक

पाठक मंच

भारतीय गणतंत्र में 'थ्री इडियट्स'

फ़िल्म 'थ्री इडियट्स' की इतनी तारीफ़ सुनी कि मुझमें भी उस . की उत्सुकता जागृत हुई। यह फ़िल्म भारतीय गणराज्य की स्थापना के बाद के 60 वर्षों में इसके 'सफल' लेकिन फिर भी असन्तुष्ट उन्नतिशील मध्यवर्ग की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास करती है। यह आधुनिक भारत की सड़ी-गली शिक्षा व्यवस्था की कमियों की ठीक-ठीक शिनाख़्त करती है जो गोल छेद में चौकोर खूँटा फ़िट करने का प्रयास करती रहती है। इतना तो तय है कि जिस तरीक़े से आज हम लोगों को शिक्षा दी जाती है अगर मौक़ा मिले तो हममें से अधिकतर लोग उससे बुनियादी तौर पर भिन्न तरीक़े की शिक्षा पाना चाहेंगे। बेशक, परीक्षा में अच्छे नम्बर स्कोर करने की उन्मादी घुड़दौड़ और रट्टामार पढ़ाई से हम सभी नफ़रत करते हैं हालाँकि न चाहते हुए भी हमें ऐसा करना पड़ता है। लेकिन तथ्य यह है कि सबकुछ जानने के बावजूद और फ़िल्म को पसन्द करने और उसे बॉक्स-ऑफ़िस हिट बनाने के बावजूद अधिकतर 'सफल' लोग अपने रोज़मर्रा के जीवन में कैरियर और पैसा बनाने की इस घुड़दौड़ में शामिल हैं। इसका अर्थ है कि अपने आप में शिक्षा व्यवस्था ही इस समस्या का मूल नहीं है। समस्या सहस्त्रबुद्धे जैसे प्रोफ़ेसरों के नज़रिये और फ़रहान और राजू जैसे माता-पिता की ओर से बच्चों पर दबाव डालने में भी नहीं है। यहीं इस फ़िल्म की सीमा भी समझ में आती है। यह समस्या को सही ढंग से प्रकट करती है लेकिन उसके मूल में नहीं जाती; इसके बजाय यह कुछ सतही नुस्ख़े सुझाती है।

शिक्षक और माता-पिता अन्तरिक्ष में नहीं रहते; वे इसी समाज के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक परिवेश में जीते हैं। उनका रवैया और व्यवहार निश्चित ही इसी परिवेशजनित मूल्यों द्वारा शासित होता है। यदि किसी समाज की आर्थिक व्यवस्था इसके सदस्यों के बीच मुनाफ़े की हवस और विवेकहीन प्रतिस्पर्द्धा पर आधरित हो, तो यह सोचना केवल एक ख़्याली बात होगी कि इससे लोगों के विचार प्रभावित नहीं होंगे। यदि किसी व्यक्ति की सफलता उसकी दौलत से मापी जायेगी न कि समाज के प्रति उसके योगदान से, तो कोई आश्चर्य नहीं कि माता-पिता बच्चों को उसी प्रकार की शिक्षा देना चाहेंगे जिससे के वे ख़ूब पैसा कमा सकें और समाज में हैसियत-रुतबा हासिल कर सकें! यदि समाज की आर्थिक व्यवस्था को समाज की ज़रूरत पूरा करने वाले मानव नहीं बल्कि सत्ताधारी वर्ग का मुनाफ़ा बढ़ाते रहने वाले आज्ञाकारी और विनीत औद्योगिक गुलामों की चाहत हो, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शिक्षा व्यवस्था को इसी प्रकार ढाला जायेगा कि वह बेहतर मनुष्य बनाने के बजाय अधिक कुशल इन्सानी मशीनें तैयार करे।

भले ही इक्का-दुक्का शिक्षकों और माता-पिता का हृदयपरिवर्तन हो जाए; भले ही रैंचो जैसे कुछ अत्यन्त प्रतिभावान व्यक्ति पैदा हो जायें और शिक्षा में कुछ-कुछ संशोधन कर दिये जायें तो भी इससे व्यापक समाज के समग्र व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, यदि आर्थिक ढाँचा वैसे का वैसा बना रहे और पूरी बेशर्मी के साथ लालच और स्वार्थ के मूल्यों को बढ़ावा देता रहे। समाज का प्रत्यक्ष समग्र व्यवहार केवल तभी बदला जा सकता है यदि एक बुनियादी रूप से भिन्न आर्थिक व्यवस्था स्थापित की जाये जिसका उद्देश्य लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना हो और जो हर व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का सम्पूर्ण विकास करने का अवसर देती हो। लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था को ध्वस्त करके इसके स्थान पर एक क्रान्तिकारी और निष्पक्ष व्यवस्था स्थापित की जाये जिसमें समाज की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए लोग एकजुट होकर काम करें और इस प्रक्रिया में अपनी सम्पूर्ण क्षमता का सदुपयोग करें।

शायद बाज़ार और मुनाफ़े के लिए बनायी गयी एक फ़िल्म से मैं कुछ ज़्यादा ही अपेक्षा कर रहा हूँ। आमिर ख़ान या विधु विनोद चोपड़ा कोई ऐसी फ़िल्म क्यों बनायेंगे या चेतन भगत कोई ऐसी किताब क्यों लिखेंगे जो इस आर्थिक ढाँचे पर प्रहार करे या इसे ध्वस्त करने के लिए प्रेरित करे? आख़िरकार इस व्यवस्था से उन्हें ही तो लाभ होता है! यह आर्थिक ढाँचा ही तो उनकी विलासितापूर्ण जीवनशैली की गारण्टी देता है और करोड़ों विपन्न भारतीयों की तुलना में उन्हें 'सफलता' के ख़िताब से नवाज़ता है।

इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि आज़ादी मिलने के 62 साल बाद भी इसी व्यवस्था में 40 करोड़ भारतीय भुखमरी रेखा (जिसे शिष्ट भाषा में ग़रीबी रेखा कहा जाता है) से नीचे रह रहे हैं; क्या फ़र्क़ पड़ता है कि इसी व्यवस्था में 46 प्रतिशत बच्चे सिर्फ़ इसलिए कुपोषण के शिकार हैं कि उनके माता-पिता हाड़तोड़ मेहनत करने के बावजूद उनका पेट नहीं भर पाते; क्या फ़र्क़ पड़ता है कि करोड़ों बच्चों की पढ़ाई केवल इसलिए छूट जाती है कि उनके माता-पिता उनकी शिक्षा का ख़र्च नहीं उठा सकते; यह उनका सिरदर्द नहीं है कि 77 प्रतिशत भारतीय जनता 20 रुपया रोज़ से कम पर गुज़ारा करती है जबकि दालों की क़ीमत 90 से 100 रुपया प्रति किलो तक पहुँच गयी है।

कोई आश्चर्य नहीं कि समस्या की जड़ में जाने की विफलता के कारण फ़िल्म 'ऑल इज़ वेल' (सब बढ़िया है) के रहस्यपूर्ण विभ्रम का प्रचार करती है जैसा कि लोगों की समस्याओं का निवारण करने में असफल होने पर भारतीय 'गणतंत्र' (वास्तव में धनिकतंत्र) के शासक करते हैं। लेकिन देश का शासक वर्ग और यह फ़िल्म दोनों एक काम अवश्य करते हैं – वे लोगों की उम्मीदों को आसमान तक ऊँचा उठा देते हैं, जिसे पूरा करने में यह व्यवस्था एकदम निकम्मी साबित होती रही है। यही वह चीज़ है जिससे कुछ सकारात्मक होने

की उम्मीद की जा सकती है क्योंकि लोगों की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा कर पाने में विफल होने पर इस ढाँचे का भहराकर गिर जाना और उसके स्थान पर एक न्यायपूर्ण व्यवस्था का बनना निश्चित है। यह व्यवस्था 'इडियटों' को लम्बे समय तक मूर्ख़ बनाती नहीं रह सकती। वास्तव में 'इडियटों' के पास इसके अलावा और कोई विकल्प भी नहीं है कि वे इस व्यवस्था के क्रान्तिकारी रूपान्तरण के लिए संघर्ष करें, तभी वे अपनी क्षमताओं को साकार कर सकेंगे और भावी पीढ़ियों को यह मौक़ा दे सकेंगे कि वे अपनी पसन्द की शिक्षा और पेशे का चुनाव कर सकें। केवल ऐसी क्रान्तिकारी उम्मीद ही हमें चारों तरफ़ फैले अन्धकार में उजाले की किरण दिखा सकती है।

– आनन्द सिंह
पुणे

आपकी पत्रिका मिली। अच्छी लगी। नौजवानों को सामाजिक बदलाव की लड़ाई में डटे देखकर अच्छा लगता है। कोई कविता से, कोई कहानी से, कोई लेखों से बाज़ार व्यवस्था से लड़ने में लगे हैं। मैं हिमाचल प्रदेश के प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ा हूँ। समय निकालकर प्रगतिशील पत्र-पत्रिकाओं को जन-जन तक पहुँचाने में लगा हूँ। कि विचार फैलेंगे तो काम करेंगे। हम चाहते हैं कि आपकी 'आह्वान' भी नौजवान आबादी तक ले जाया जाये। तथैव आप कम-अज-कम 5 प्रतियाँ वितरित करने हेतु हर अंक भेज दिया करे। हमारी प्रति अलग से। उसकी सदस्यता राशि मनीऑर्डर से प्रेषित कर रहा हूँ।

– सुरेश सेन 'निशांत'
मण्डी, हिमाचल प्रदेश

घोषणापत्र का प्रपत्र : प्रपत्र 4 (नियम 8 के अन्तर्गत)

समाचार पत्र का नाम	मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का आह्वान
पत्र की भाषा	हिन्दी
आवर्तिता	द्वैमासिक
पत्र का खुदरा बिक्री मूल्य	दस रुपये
प्रकाशक का नाम	अभिनव सिन्हा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094
प्रकाशन का स्थान	करावल नगर, दिल्ली
मुद्रक का नाम	अभिनव सिन्हा
पता	बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094
मुद्रणालय का नाम	रुचिका प्रिण्टर्स, I/10665, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
सम्पादक का नाम	अभिनव सिन्हा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094
स्वामी का नाम	अभिनव सिन्हा
राष्ट्रीयता	भारतीय

मैं अभिनव सिन्हा, यह घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त तथ्य मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर
(अभिनव सिन्हा)
प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी

आह्वान यहाँ से प्राप्त करें

उत्तर प्रदेश • जनचेतना, जाफ़रा बाज़ार, गोरखपुर, • जनचेतना, डी-68, निराला नगर, लखनऊ • जनचेतना स्टॉल, कॉफ़ी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ (शाम 5 बजे से 8.30 तक) • शहीद पुस्तकालय द्वारा डॉ. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवा सदन, मर्यादपुर, मऊ • प्रोग्रेसिव बुक स्टॉल, विश्वनाथ मंदिर गेट, बी.एच.यू. वाराणसी • करेंट बुक डिपो, 18/53, माल रोड, गूलबाग के सामने, कानपुर। **दिल्ली** • अभिनव सिन्हा, बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर • पूरन, रूम नं. 32, हिन्दू कॉलेज हॉस्टल, नॉर्थ कैम्पस, दिल्ली विश्वविद्यालय • पी.पी.एच., जे.एन.यू. • गीता बुक सेंटर, जे.एन.यू. • यू. स्पेशल : दि यूनिवर्सिटी बुकशॉप, नॉर्थ कैम्पस, दिल्ली विश्वविद्यालय। **बिहार** • श्री रामनारायण राय (शिक्षक), प्रोफ़ेसर कॉलोनी, सी.एन. कॉलेज साहेबगंज, पो.-करनौल, जिला मुजफ्फ़रपुर • डॉ. गिरिजाशंकर मोदी, 'शब्दसदन', सिकंदरपुर, मिरजानहाट, भागलपुर • वाणी प्रकाशन, पटना कॉलेज के सामने, अशोक राजपथ, पटना, बिहार • मैगजीन कॉर्नर, दिनकर चौक, नालारोड, पटना। **राजस्थान** • चन्द्रशेखर, लोकायत प्रकाशन, 883, लोधो की गली, एम.डी. रोड, जयपुर • शैलेन्द्र चौहान द्वारा शिवराम सं. 'अभिव्यक्ति', 4/पी/46, तलवण्डी, कोटा • ओ.पी. गुर्जर, 137, गोल्फ़ कोर्स स्कीम, एयर फ़ोर्स, जोधपुर। **हरियाणा** • डॉ. सुखदेव हुंदल, ग्रामपोस्ट संतनगर वाया जीवन नगर, सिरसा। **महाराष्ट्र** • सनी/प्रशांत, रूम नं.-152, हॉस्टल नं.-6, आई.आई.टी. मुम्बई, पवई, मुम्बई • वी. पी. सिंह, बी-5, संकष्टि कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, हाजी मलंग रोड, चक्की नाका, कल्याण, महाराष्ट्र • पीपुल्स बुक हाउस, मेहरजी हाउस, 15, कावसजी पटेल स्ट्रीट फ़ोर्ट, मुम्बई। **पंजाब** • सुखविन्दर, 154, ओम बेकरी के सामने, शहीद करनैल सिंह नगर, फ़ेज-3, पखोवाल रोड, लुधियाना • पंजाब बुक सेण्टर, SLO-1126-27, सेक्टर - 22 बी चण्डीगढ़। **पश्चिम बंगाल** • पुस्तक केन्द्र, भारतीय भाषा परिषद, 36ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता • मिथलेश कुमार, के-185, बी. पी. टाउनशिप, कोलकाता • न्यू होराइजन बुक ट्रस्ट, 57/1, पटुआ टोला लेन, कोलकाता • बुक मार्क, 6, बंकिमचन्द्र चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता। **मध्यप्रदेश** संजय बुक स्टॉल, शाप नं. 43, ग्वालियर। **हिमाचल प्रदेश** • सुरेश सेन 'निशांत', गाँव सलाह, डाक. सुन्दरनगर-1, जिला- मण्डी।